निस्केयर
NISCAIR

विज्ञान प्रगति

सितम्बर 2020

निदेशक
डॉ. रंजना अग्रवाल

सम्पादक
डॉ. बालकराम

सह सम्पादक
डॉ. मनीष मोहन गोरे

सहायक सम्पादक
शुभदा कपिल

प्रोडक्शन
अश्वनी कुमार ब्राह्मी
अरूण उनियाल
मो० शकील अहमद

लेआउट एवं डिजाइन
नीरू विजन
अभिनव राज

बिक्री एवं वितरण
चारू वर्मा
रणबीर सिंह

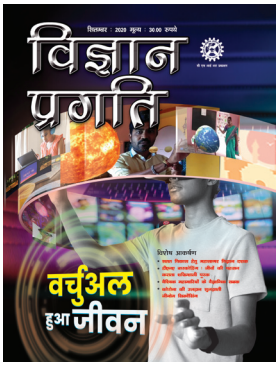

आवरण : **अभिनव राज**

www.sciencemag.org

ठहराव का नया नाम ''एन्थ्रोपॉज़''

लॉकडाउन से जिंदगी शांत भले ही दिखी हो लेकिन घरों की चार दीवारियों और इंसानों के अंदर बहुत ही उथल-पुथल रही। इधर जानवरों की जिंदगी भी सामान्य नहीं रही। कोविड-19 के मद्देनज़र विश्व के विभिन्न राष्ट्रों में लॉकडाउन के परिणामस्वरूप प्रकृति विशेष रूप से शहरी वातावरण में बदलाव देखा गया। लॉकडाउन के कारण वन्यजीवों का असामान्य व्यवहार एवं अप्रत्याशित वन्यजीवों को कई बार देखा गया है, उदाहरण के तौर पर चिली के डाउनटाउन सैंटियागो में प्यूमा को, इटली में ट्राइस्टे बंदरगाह के पास शांत जल में डॉल्फिन को, तेल अवीव (इज़राइल) के शहरी पार्कों में दिन के उजाले में सियार को देखा गया। मानवीय नज़रों से दूर तथा पोत यातायात और ध्वनि प्रदूषण के स्तर में कमी के बाद वन्यजीव दुनिया के महासागरों में अधिक स्वतंत्र रूप से घूमते देखे गये। वहीं दूसरी ओर विभिन्न शहरी आवास वाले जीव-जंतुओं जैसे चूहे और बंदरों के लिये लॉकडाउन अवधि अधिक कठिन एवं चुनौतीपूर्ण हो गई है जो मनुष्यों द्वारा प्रदान किये गए भोजन पर निर्भर हैं। कुछ क्षेत्रों में अवैध शिकार में वृद्धि हुई है, तो कहीं सामाजिक सुरक्षा उपायों के कारण लुप्तप्राय पक्षियों की रक्षा करने के लिए कई परियोजनाओं और संरक्षण प्रयासों पर भी रोक लग गई। लेकिन कुछ प्रजातियों के लिए, महामारी ने नई चुनौतियां पैदा की हैं। ऐसे समय में, अधिक दूर-दराज के क्षेत्रों में मानव उपस्थिति कम होने से संभावित रूप से लुप्तप्राय प्रजातियों के अवैध शिकार या उत्पीड़न का खतरा भी बढ़ा है।

हाल ही में, वैज्ञानिकों की एक टीम ने इस घटना का वर्णन करने के लिए एक नाम गढ़ा है ''एन्थ्रोपॉज़''। वैज्ञानिकों ने लॉकडाउन की अवधि को 'महान ठहराव' के रूप में संदर्भित करना शुरू कर दिया था, लेकिन यह महसूस किया कि इसके लिए एक सटीक शब्द सहायक होगा और वे अन्य प्रजातियों पर इस अवधि के प्रभाव का अध्ययन करेंगे। 'एन्थ्रोपॉज़' (Anthropause) दो शब्दों, एंथ्रोपो (Anthropo) अर्थात् मनुष्य से संबंधित और पॉज़ (Pause) अर्थात् ठहराव से मिलकर बना है। यह कोविड-19 से प्रेरित लॉकडाउन अवधि के लिये अधिक सटीक शब्द है जिसे 'ग्रेट पॉज़' (Great Pause) के रूप में भी संदर्भित किया जा रहा है। यह विशेष रूप से आधुनिक मानव गतिविधियों के लिये वैश्विक ठहराव (विशेष रूप से यात्रा) को संदर्भित करता है।

वैज्ञानिकों के अनुसार, इस समय जानवरों की गतिविधि पर वैश्विक स्तर पर शोध करने और इसे व्यापक रूप से सुलभ बनाने सहित कई ''जरूरी कदम'' उठाये जाने की आवश्यकता है। ''कोविड-19 बायो-लॉगिंग इनिशिएटिव'' जैसे प्रयास इसका महत्वपूर्ण उदाहरण हैं जो ''बायो-लॉगर'' नामक छोटे इलेक्ट्रॉनिक ट्रैकर के साथ जानवरों के आंदोलनों, व्यवहार और तनाव के स्तर को ट्रैक करने के लिए एक वैश्विक परियोजना है। 21वीं सदी में इस लॉकडाउन अवधि का अध्ययन मानव-वन्यजीव संबंधों के लिये एक मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करेगा क्योंकि मानव आबादी का विस्तार अभूतपूर्व दर से हो रहा है जो प्राकृतिक वातावरण में नकारात्मक बदलाव के लिये ज़िम्मेदार है। मानव एवं वन्यजीवों के व्यवहार से संबंधित यह अंतर्संबंध एक बहुमूल्य जानकारी प्रदान करने में मदद कर सकता है, जो कि वैश्विक जैवविविधता के संरक्षण, पारिस्थितिकी तंत्र को बनाए रखने और वैश्विक स्तर पर जूनोसिस रोग एवं पर्यावरणीय परिवर्तनों की भविष्यवाणी करने में उपयोगी हो सकता है। इस प्रकार कोविड-19 महामारी बड़ी मात्रा में डेटा क्लस्टर का निर्माण करके वन्यजीवों की प्रतिक्रियाओं से संबंधित एक वैश्विक परिदृश्य निर्मित करने का अवसर देती है।

मूल्य
एक अंक : 30.00 रुपये
एक वर्ष : 300.00 रुपये
दो वर्ष : 570.00 रुपये
तीन वर्ष : 810.00 रुपये
विदेशी वार्षिक सदस्यता : 65$
शिकायत : 011-25841647
ई-मेल : rs@niscair.res.in

सम्पादकीय : 011-25841769, 011-25846301, 04-07/370
प्रोडक्शन : 011-25847353, 25846301, 04-07/217, 337
विज्ञापन : 011-25843359
बिक्री : 011-25841647, 25846301, 04-07/286, 289
फैक्स : 011-25847062
ई-मेल : vp@niscair.res.in
वेब साइट : http://www.niscair.res.in

© राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान
लेखकों के कथनों ओर मतों के लिये सी.एस.आई.आर. -राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान, डॉ. के. एस. कृष्णन् मार्ग, नई दिल्ली - 110 012 उत्तरदायी नहीं है।
पत्रिका से संबंधित सभी विवाद दिल्ली न्यायालय द्वारा ही निपटाये जायेंगे।